Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 4, Issue 2 – 2021
ISSN: 2582-1377

नियतिवाद से प्रभावित भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास

डॉ. राजेश श्रीवास[1]

[1]विभागाध्यक्ष, हिंदी, सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय, नवापारा (राजिम) रायपुर, छत्तीसगढ़

शोध सारांश

भगवती चरण वर्मा न केवल नियतिवादी दर्शन का समर्थन करते हैं, बल्कि उसे स्वस्थ दृष्टिकोण मानते हैं और वे स्वंय स्वीकारते हैं। इसलिये उनके उपन्यास साहित्य में शुरू से अंत तक 'नियतिवाद' खुलकर सामने आया है। 'नियतिवाद' जिन मुद्दों पर प्रमुख रूप से विचार करता है, उन्हें वर्मा जी एक अदृश्य शक्ति की प्रेरणा मानते हैं, जिसके पथ के प्रत्येक कदम और प्रत्येक मोड़ पूर्व निर्धारित हैं, उसमें कहीं कोई परिवर्तन संभव नहीं है।

वास्वत में वर्मा जी के उपन्यासों के लगभग सभी पात्र परिस्थिति से पराजित हैं। अतः मनुष्य की इच्छाओं का अंतिम परिणाम दुःख-ही-दुःख है। यह धारणा निराशावाद को जन्म देती है। इस निराशा के कुहासे से बचने के लिए वर्मा जी ने 'गीता' के निष्काम कर्मवाद का अवलंबन लिया है। यदि वर्मा जी ने अपनी विचारधारा को उदात्त न किया होता तो वह अवश्य ही मनुष्य को कुण्ठित कर अकर्मण्य बना देती और वे कर्मवाद की प्रतिष्ठा न कर पाते। अतः उन्होंने अपने साहित्य में 'नियतिवाद' के साथ-ही-साथ कर्मवाद को भी प्रतिस्थापित किया है।

प्राचीन साहित्य से ज्ञात होता है कि मानव अपने आप को सदा सृष्टि का केन्द्र-बिन्दु मानता रहा है। इसके बाद भी वह अनुभव करता है कि सृष्टि में घटने वाली कई घटनाओं पर उनका वश नहीं है। मनुष्य चाहकर भी अथवा न चाहकर भी कुछ नहीं कर पाता-जो कुछ होना होता है, वह होकर रहता है। यह घटित होना अनिवार्यता है-मसलन हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के मिलने से पानी बनता ही है-आदमी चाहे अथवा न चाहे। इस आधार पर मनुष्य का अपनी इच्छा के अनुसार कार्य कर लेने का गौरव पालना एक भ्रांति है। सारा संसार एक अति-मानवीय अदृश्य शक्ति से परिचालित है। सृष्टि में सब कुछ नियत है। मनुष्य चाहता कुछ है और होता कुछ है। न जाने कितनी घटनाए

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 4, Issue 2 – 2021
ISSN: 2582-1377

ऐसी है, जिनके पीछे कार्य-कारण का वैज्ञानिक आधार भी पराजित हो जाता है। आईंस्टीन जैसा वैज्ञानिक इसी आधार पर एक सीमा के बाद दार्शनिक बन जाता है। आईंस्टीन के दार्शनिक बनने के पीछे प्राप्त-ज्ञान के सामर्थ्य का चुक जाना है, लेकिन ऐसे विचारक भी है जो मानतें है कि काल का चक्र चल रहा है, जिसके सामने मानवीय सामर्थ्य और उपलब्धियॉ अत्यंत बौनी हैं। अतः मनुष्य की विवशता को स्वीकार करने वाली इस विचारधारा को पूर्वी और पाश्चात्य जगत में व्यापक मान्यता प्राप्त हुई है। ऐसे ही विचारों से परिपूर्ण वर्मा जी ने अपने जीवन की लम्बी अवधि में, नियति की हिलकोरों में बहते हुए, संघर्षों के झंझावात को झेलते हुए संसार के विविध अनुभवों द्वारा जों जीवन-सत्य प्राप्त किया है, उसे अपने साहित्य में व्यक्त किया है।

भगवतीचरण वर्मा न केवल नियतिवादी दर्शन का समर्थन करते हैं, बल्कि उसे एक स्वस्थ दृष्टिकोण मानते हैं- '' नियतिवाद का दृष्टिकोण, एक स्वस्थ दृष्टिकोण है-मेरा ऐसा विश्वास है, जो मेरे निजी अनुभवों से मुझे प्राप्त है और अपने अनुभवों द्वारा इस विश्वास कों प्राप्त करने के कारण मुझमें इतना साहस है कि मैं अपनी बात को बिना किसी संकोच के कह सकू।''[1] अतः वर्मा जी स्वयं स्वीकारते हैं कि वे किसी विचारधारा के पूर्वाग्रह से बॅधे हुए नहीं है। उनकी विचारधारा अर्जित नहीं बल्कि अनुभवजन्म है। उन्होंने तो यहॉ तक स्वीकार किया है कि नियतिवादी विचारधारा उनके आधारभूत व्यक्तित्व में विद्यमान है अर्थात जन्मजात स्वभाव के रूप उन्हें प्राप्त है। इसीलिए उनके उपन्यास साहित्य में शुरू से अंत तक 'नियतिवाद' खुलकर सामने आया है। वर्मा जी के समस्त उपन्यासों में 'नियति' की सबलता-सक्षमता का चित्रण हुआ है। संसार का प्रत्येक मानव इस 'नियतिवाद' की सत्ता को स्वीकार करता है, चाहे वह आस्तिक हो , चाहे नास्तिक। वर्मा जी एक आस्थावादी कलाकार हैं। उन्हें 'नियति' के सामर्थ्य में विश्वास है तथा वह ईश्वर, भागवान और खुदा को अदृश्य रूप में मानते है और विश्वास करते हैं कि मनुष्य के हाथ में कुछ नहीं है, किसी के हाथ में कुछ भी नहीं है। वही अनजाना विधान जैसा चाहता है, वह होता है। मनुष्य को अपने इशारे पर नचाया करता है। नियति की अपनी ही एक गति है, उसका अपना एक क्रम है, जिसे कोई नहीं जानता। इसीलिए उसे अदृश्य शक्ति की संज्ञा दी जाती है। इतना ही नहीं मनुष्य उसी अदृश्य शक्ति के इच्छानुसार कार्य करने को बाध्य है, पर वह स्वयं अपने द्वारा निर्मित विधान में बॅधा हुआ है और उसमें इतना सामर्थ्य नहीं कि रंचमात्र भी विलग हो सके। मनुष्य केवल निमित्त मात्र है-'' यहॉ किसी का ठिकाना नहीं कठपुतलियों का नाच हो रहा है, डोर किसी दूसरे के हाथ

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 4, Issue 2 – 2021
ISSN: 2582-1377

में हैं, जिसे हम देख नहीं पाते।"[2] उपन्यास 'सामर्थ्य और सीमा' के पात्र नाहर सिंह के ये विचार यकीनन उन पर आरोपित 'नियतिवाद' ही है।

नियतिवाद' जिन मुद्दों पर प्रमुख रूप से विचार करता है, उन्हें वर्मा जी एक अदृश्य शक्ति की प्रेरणा मानतें हैं, जिसके पथ के प्रत्येक कदम और प्रत्येक मोड़ पूर्व निधारित है, उसमें कहीं कोई परिवर्तन संभव नहीं है। अदृश्य लिपि के आवेश में परिवर्तन लाना मानवमात्र में यह क्षमता नहीं है। इसी बात को उपन्यास 'चित्रलेखा' के सामंत बीजगुप्त एक अज्ञात शक्ति पर विश्वास करते हुए कहते हैं-" मनुष्य परतंत्र है परिस्थितियों का दास है, लक्ष्यहीन है एक अज्ञात शक्ति प्रत्येक व्यक्ति को चलाती है। मनुष्य की इच्छा का कोई मूल्य नहीं है। मनुष्य स्वावलंबी नहीं है, वह कर्ता भी नही है, साधन मात्र है।"[3] मानव विवश है, उसके अधिकार में कुछ भी नहीं है, वह न अपने को या समाज को बना सकता है और न मिटा सकता है। नियति के हाथों का खिलौना बनकर काल-चक्र के सामने घुटने टेक देता है। उपन्यास 'वह फिर नहीं आई' के ज्ञानचंद 'नियति' के समक्ष अपने को विवश पाता है -"नियति का ताना-बाना बुनने वाले पर हमारा कोई वश नहीं। इसके विरूद्ध चलने की काम करने हिलने-डुलने तक की हमें स्वाधीनता नहीं, हममें क्षमता नहीं।"[4] वर्मा जी के उपन्यास के अधिकतर पात्र नियति के सामने विवश, असहाय से प्रतीत होते हैं। इसकी प्रकार नियति के घेरे में घिरा उपन्यास 'थके पॉव' का केशवचन्द्र भी कदम-कदम पर यह अनुभव करता हुआ दीख पड़ता है- "बहुत-सी बातें ऐसी होती है, कि जिन पर मनुष्य का बस नही चलता। क्योंकि सब कुछ विधि के हाथ में है।"[5] उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक केशव की यह विचारधारा चलती रहती है।

वर्मा जी ने अपने इस 'नियतिवाद' से समस्त रचना संसार को रच दिया है। परिस्थितियों के सामने मनुष्य की विवशता को लेखक ने बार-बार चित्रित किया है। इसके उपन्यास 'भूले बिसरे चित्र' में तो उस पुरूष की कथा है, जो परिस्थितियों का दासत्व स्वीकार न करते हुए भी उन्हें सहज-भाव से स्वीकार करता चलता है। बाबू ज्वाला प्रसाद, गजराजसिंह को यह सूचना देने जाते हैं, कि प्रभुदयाल बरजोरसिंह की जमीन पर कल कब्जा करेगा। यह सुनकर गजराजसिंह गंभीर होकर कहते हैं -" ज्वाला बाबू, जो होना था वह हो गया। जो कुछ आगे होने वाला है, वह अपने बस की बात नहीं है,उसे कोई रोक नहीं सकता।"[6] नियति के इस चक्र को कोई बदल नहीं सकता होना वही है जो ईश्वर चाहेंगे। इस प्रकार संसार में किसी भी चीज पर किसी का अधिकार नहीं है, कोई कुछ नहीं करता, कर भी नहीं सकता, सब कुछ अपने आप होता चला जाता है। नियति के सामने सब

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

बेबस, लाचार है। वर्मा जी की यह धारणा आज भी तर्कसंगत है। इसके अलावा वर्मा जी का यह मत है कि कुछ मनुष्य अपने आप को सामर्थ्यवान समझता है, जो कि उनकी भूल है। इसी अहं ओर दर्प के कारण वह प्रकृति तथा नियति तक की उपेक्षा करता है, किन्तु उसकी यह परिसीमा है। सीमा के समाप्त होते ही प्रकुति या नियति के समक्ष उसका अभिमान, उनका दर्प टूटकर खंड-खंड हो जाता है और उसे असहाय एवं निर्बल होकर सशक्त नियति के विधान को स्वीकार करना पड़ता है।उपन्यास 'सामर्थ्य और सीमा' के पात्र नाहर सिंह के व्यक्तित्व में हम नियति के प्रति ऐसे ही अडिग विश्वास पाते है, जो सर्वत्र उपन्यास में छाया हुआ है। उनका विश्वास है कि मनुष्य किसी भी कार्य को अपने दम्भ भरे पौरूष के बल पर पूरा नहीं कर सकता, जब तक ईश्वर का उसमें हाथ न हो, रानी मानकुमारी से स्पष्ट शब्दों में वे कहते हैं-" रानी बहू, नियति का चक्र चल रहा है और इस नियति के चक्र की गति बदलने में मैं असमर्थ हू, तुम असमर्थ हो, हरेक आदमी असमर्थ है। बनाने और मिटाने वाला कोई दूसरा ही है हम तो स्वयं बनाए मिटाए जाते है।"[7] इसी बात को नाहर सिंह मौलाना रियाजुल हक से भी कहते हैं, कि जो तुम चाहते हो वह नियति के समक्ष कुछ नहीं हो सकेगा। तुम स्वयं उसके हाथ के खिलौने हो। देखा जाय तो कर्ता कोई और होता है, इंसान एक निमित्त मात्र होता है। नाहर सिंह का यह नियतिवाद उनके जीवन में अनुभवों का परिणाम है, जिन्हें उन्होंने जीवन-संघर्षों के थपेड़ों के उतार-चढ़ाव के माध्यम से प्राप्त किया था।

वास्तव में वर्मा जी के उपन्यासों के लगभग सभी पात्र परिस्थिति से पराजित है। इस बात का स्वयं लेखक बार-बार संकेत देते रहे हैं, कि मनुष्य होने का अर्थ है परिस्थितियों से समझौता करना। अपने को नियति के हाथ में सौंप देना। उपन्यास 'रेखा' में भी इस 'दर्शन' का संकेत मिलता है। इसी उपन्यास के पात्र रेखा स्वयं अपने अभिशापित जीवन को नियति का खिलवाड़ मानती हैं -"नियति मे मेरे साथ बहुत बड़ा खिलवाड़ किया है, लेकिन मैं रेखा हू, रेखा। सब मिट गए, लेकिन यह रेखा मिट-मिट कर भी अमिट है।"[8] यद्यपि 'रेखा' उपन्यास में नियतिवादी दर्शन का उल्लेख बहुत कम ही हुआ है, परन्तु उसके कोई-कोई पात्र इस दर्शन से प्रभावित हुए बिना न रह सके हैं।

उपन्यास 'सीधी सच्ची बातें' में भी इसी तरह के पात्र हैं, जो नियति के चक्र से अपने को अलग नहीं कर पाते है। इस उपन्यास के नायक जगतप्रकाश अपने नियति से बँधे हुए ईश्वर की अनंत शक्ति के सामने अपनी बेबसी को ढोते रहता है। वे ईश्वर के विधान पर अपनी शक्ति को बिल्कुल निर्मूल पाते है। इसी लिए जब माताप्रसाद की मृत्यु होती है, तो यमुना को ढाढ़स बँधाते हुए कहता

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

है- " धीरज धरो, विधि के विधान को टाला नहीं जा सकता, यहि विधि का विधान है।"[9] जगतप्रसाद सब कुछ नियति पर छोड़कर स्वाभाविक ढंग से जीवन व्यतीत करना चाहता है। इसके अलावा इस उपन्यास के कुलसुम, जमील अहमद आदि पात्र नियति की सत्ता तथा खुदा की मर्जी पर विश्वास करते है।

वर्मा जी के परवर्ती उपन्यास 'सबहिं नचावत राम गोसाई' तथा 'प्रश्न और मरीचिका' में भी नियतिवादी दर्शन की अभिव्यंजना हुई हैं। 'सबहिं नचावत राम गोसाई' कृति का नाम ही यह ध्वनित करता है कि सम्पूर्ण उपन्यास नियतिवाद है और यह पात्रों के माध्यम से स्पष्ट हो जाता है तथा उपन्यास के अंत में स्वयं लेखक भी इस प्रभाव से बच नहीं पाता। वे अपनी नियति को अपनी कृति से जोड़कर कहते हैं- " सबहिं नचावत राम गोसाईं' में तो यह सब चरित्र राम गोसाई के इंगित पर नाच रहे हैं। यह चरित्र ही नहीं, यह दुनिया राम गोसाई के इंगित पर नाच रही है, यानी मैंने भी राम गोसाई के इंगित पर नाचते हुए यह कहानी लिख डाली।"[10] नियति की इसी परम्परा में वर्मा जी के उपन्यास 'प्रश्न और मरीचिका' भी उपर्युक्त उपन्यास की भाँति नियतिवादी कृति है। इस औपन्यासिक रचना के प्रत्येक पात्र भी नियति के समक्ष झुक जाता है, उसके सपने टूट जाते है और वह निरीह , परमेश्वर की इच्छा मानकर अपनी स्थिति में संतुष्ट होने को बाध्य हो जाता है। देश-विभाजन के बाद मेलाराम उदयराज से कहता है -" यह बँटवारा होना ही था, कोई नही रोक सकता था उसे। भला भगवान के विधान को भी कोई रोक सकता है।"[11] नियति के सामने हर मानव बेबस और लाचार है। इसीलिए मनुष्य का सोचा हुआ कुछ भी नहीं होता। वह सिर्फ अपने में विवश है, स्वयं में कोई गति नहीं रह जाती, वह अदृश्य शक्ति के सामने पराजित है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जो कुछ हमें मिला है उसे भोगना है हमें, चाहे हँसकर, चाहे रो कर। हम स्वयं कुछ ले भी तो नहीं सकते, सब कुछ अपने आप हमें मिलता रहता है। हम भले ही समझें कि हमने प्राप्त किया है, लेकिन हम कर्त्ता कब हैं? हम तो कर्म है, क्योंकि हम पैदा होते हैं, हम मर जाते है। न पैदा होना हमारे हाथ में है न मरना हमारे हाथ में है। सारी शक्ति का नियंता तो ऊपर वाला है, जिसके हाथ में संसार के समस्त प्राणी की डोर है।

नियतिवाद से प्रभावित कर्मवाद

मनुष्य की हरेक मूल धारणाओं में कर्म की प्रेरणा होती है। मानव को जो जीवन प्राप्त है, वह उसके कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त है, परन्तु एक ऐसी अदृश्य शक्ति है, जिसके आगे किसी की कुछ

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

भी नहीं चल सकती। इस प्रकार के जीवन-दर्शन की अभिव्यक्ति वर्मा जी के सम्पूर्ण साहित्य में मिलती है। वर्मा जी का अपना यह विश्वास है कि मनुष्य कुछ और सोचता है और ईश्वर कुछ और, किन्तु भगवान की इच्छा के सामने मानव नगण्य है। अतः मनुष्य की इच्छाओं का अंतिम परिणाम दुःख-ही-दुःख है। यह धारणा निराशावाद को जन्म देती है। इस निराशा के कुहासे से बचने के लिए वर्मा जी ने 'गीता' के निष्काम कर्मवाद का अवलंबन लिया है, जिससे वह मानव-मात्र को कर्म करने का संदेश देते हैं। यदि वर्मा जी ने अपनी विचारधारा को उदात्त न किया होता तो वह अवश्य ही मनुष्य को कुण्ठित कर अकर्मण्य बना देती और वे कर्मवाद की प्रतिष्ठा न कर पाते। उन्हांने अपने साहित्य में 'नियतिवाद' के साथ-ही-साथ कर्मवाद की प्रतिष्ठापन किया है, जिसकी विवेचना करना जरूरी है। वे हिन्दू होने के कारण 'गीता' के निष्काम कर्मवाद में आस्था रखते हैं। इसीलिए उनके साहित्य में यदाकदा इस आस्था और विश्वास का भी चित्रण हुआ है, जिसका 'नियतिवाद' से अभिन्न संबंध है। उपन्यास 'चित्रलेखा' में नर्तकी चित्रलेखा अपने प्रेमी बीजगुप्त से कहती है-''कुमारगिरि निर्जन का निवासी है और हम दोनों कर्मक्षेत्र के अभिनेता है।''[12] उपन्यास 'थके पॉव' में कर्म को प्रधानता देते हुए कर्म करने की प्रेरणा से अभिभूत केशव का मन इसी प्रकार के विचारों के बारे में चिंतन करता है-''गति ही जीवन है, गतिहीनता मृत्यु है। इस गति का अनिवार्य भाग है-संघर्ष। इस गति को आरंभ जन्म के साथ होता है, इस गति का अंत मृत्यु के साथ होता है।''[13] काम करना मनुष्य का स्वभाव और गुण है। वह अंत समय तक इस आशा के साथ जुड़ा रहता है, चिपका रहता है, क्योंकि निराशा मृत्यु का प्रतीक है।

मनुष्य जीवन पैदा होते ही संघर्षो से जुझता रहता है और इस संघर्ष में कभी एक पक्ष जीतता है, कभी दूसरा पक्ष और यह निरंतर चलते रहता है, क्यांकि यह न रूकने वाला संघर्ष है जो कर्म करने की सतत प्रेरणा देता है। जीवन का धर्म है- जागृति और कर्म। 'सीधी सच्ची बातें' उपन्यास का जमील अहमद यह जानता है, कि देशभर में जो मजहबी तनाव बढ़ रहा है उससे मुक्त नहीं हुआ जा सकता है, लेकिन कर्म करना मनुष्य का कर्त्तव्य है-इस सिद्धांत को मानते हुए कहता है-'' बहरहाल इंसान होने के नाते एक दफा कोशिश तो करूॅगा, होगा वही जो खुदा को मंजूर है।''[14]

उपन्यास 'प्रश्न और मरीचिका' के पात्र शिवलोचन शर्मा भी कर्म को महत्ता देते हैं। जीवन एक अबाध गति से चलने वाला है और जब-तक शरीर में प्राणशक्ति है, तब-तक इस कर्मक्षेत्र से मुहॅ नहीं मोड़ा जा सकता है। शिवलोचन शर्मा के शब्दों में- '' विजय और पराजय तो जीवन के साथ लगे हुए हैं। मुझे संघर्ष करना है, अंत तक संघर्ष करना है।''[15]

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

इस प्रकार की विचारधारा से यह पता चलता है कि जीवित रहने के लिए कर्म करना जरूरी है। यद्यपि ईश्वर का विधान एक अलग ढंग से चलता है और चलता भी रहेगा इस दुनिया में, परन्तु जीवित वही रह सकता है, जो कर्म में समर्थ है। बुद्धि-बल में समर्थ है।

इस तरह हम इस निष्कर्ष पर पहुॅचते हैं कि नियतिवाद विधि-विधान है, प्रकृति का नियम है, सृष्टि के नियंता पर आस्था का परिणाम है और जीवन का सत्य है। इसकी उपेक्षा न करके वरन् विश्वास और आस्था द्वारा व्यक्ति का स्वस्थ विकाय करना मंगलमयी होगा। संक्षेप में कह सकते हैं कि वर्मा जी का नियतिवाद 'गीता' का कर्मवाद है, जिसे वह स्वयं स्वीकारते हैं- ''मैं गीता को भी तो नियतिवाद का प्रतिपादन ही मानता हूॅ, जहॉ कि निराशावाद से भरी अकर्मण्यता के स्थान पर आशावाद युक्त कर्म-मार्ग को नियतिवादी का रूप माना गया है।''[16] स्पष्ट है कि वर्मा जी एक नियतिवादी कलाकार हैं। उनकी नियतिवादी भावधारा समग्र रूप से उनके उपन्यासों में दिखाई पड़ती है, जो 'चित्रलेखा' से लेकर 'प्रश्न और मरीचिका' में किसी न किसी रूप में अभिव्यक्त हुई है। अतः नियतिवाद मानव-मन को अकर्मण्य नहीं बनाती, वल्कि कर्म करने की सतत् प्रेरणा देती है। यह 'गीता' के कर्मवाद पर अवलंबित है। अतः इसका महत्व सार्वकालिक है।

संदर्भ-ग्रंथ

1. वर्मा, भगवतीचरण-रंगो से मोह (प्रस्तावना)-पृ.-11
2. वर्मा, भगवतीचरण-सामर्थ्य और सीमा-पृ.-61
3. वर्मा, भगवतीचरण-चित्रलेखा-पृ.-115
4. वर्मा, भगवतीचरण-वह फिर नही आई-पृ.-22
5. वर्मा, भगवतीचरण-थके पॉव-पृ.-56
6. वर्मा, भगवतीचरण-भूले बिसरे चित्र-पृ.-45
7. वर्मा, भगवतीचरण-सामर्थ्य और सीमा-पृ.-56
8. वर्मा, भगवतीचरण-रेखा-पृ.-258
9. वर्मा, भगवतीचरण-सीधी सच्ची बातें-पृ.-191
10. वर्मा, भगवतीचरण-सबहिं नचावत राम गोसाईं-पृ.-289
11. वर्मा, भगवतीचरण-प्रश्न और मरीचिका-पृ.-14
12. वर्मा, भगवतीचरण-चित्रलेखा-पृ.-30

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

13.वर्मा, भगवतीचरण-थके पॉव-पृ.-30

14.वर्मा, भगवतीचरण-सीधी सच्ची बातें-पृ.-389

15.वर्मा, भगवतीचरण-प्रश्न और मरीचिका-पृ.-330

16.वर्मा, भगवतीचरण-त्रिपथगा-पृ.- 70.

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.